

শ্রীঃ
শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ
শ্রীমান্ বেক্টনাথার্যঃ করিতাকিঁককেসরী।
বেদান্তাচার্যর্যো মে সন্নিধত্তাং সদা হৃদি॥

॥শ্রী-বেগাসেতুস্তোত্রম্ ॥

This document has been prepared by*

Sunder Kidambi

with the blessings of

শ্রী রঙ্গরামানুজ মহাদেশিকন্

His Holiness *śrīmad āṇḍavan* of *śrīraṅgam*

*This was typeset using Bengali for T_EX.

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
॥ श्री-रेगासेतुस्तोत्रम् ॥
श्रीमान् रेक्कटनाथार्यः करितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यरयो मे सन्निधत्तां सदा हृदि ॥

एकं रेगरती मध्ये हस्तिशैले च दृश्यते।
उपाय फल भारेण स्वयं ब्रह्म परं महः ॥ १ ॥

इष्टे गमयितुं पारमेष सेतुरभसुरः।
यत्र सारस्वतं स्रोतो विश्राम्यति विशुद्धलम् ॥ २ ॥

जयति जगदेकसेतुः
रेगरती मध्य लम्बितो देवः।
प्रशमयति यः प्रजानां
प्रथितान् संसार जलधि कल्लोलान् ॥ ३ ॥

विभातु मे चेतसि विष्णु सेतुः
रेगापगा रेग विघात हेतुः।
अञ्जो जयानेः यदुपज्जम् आसीत्
अभङ्ग रक्षा हयमेध दीक्षा ॥ ४ ॥

चतुरानन सप्ततन्त्र गोप्ता
सरितं रेगरतीमसौ निरुक्कन्।
परिपुष्यति मङ्गलानि पुंसां
भगवान् भक्तिमतां यथोक्तकारी ॥ ५ ॥

श्रीमान् पितामहरधु परिचर्यमाणः
शेते भुजङ्ग शयने स महा भुजङ्गः।
प्रत्यादिशन्ति भव सङ्करणं प्रजानां
भक्तानुगच्छिह यस्य गतागतानि ॥ ६ ॥

प्रशमित हयमेध व्यापदं पद्मयानेः
श्रितजन परतन्त्रं शेषभोगे शयानम्।

শরণমুপগতাঃ স্মঃ শান্ত নিঃশেষ দোষং
শতমথ মণি সেতুং শাস্বতং বেগবত্যাঃ ॥ ৭ ॥

শরণমুপগতানাং সোযমাদেশ কারী
শমযতি পরিতাপং সংমুখঃ সর্ব জন্তোঃ।
শতগুণ পরিণামঃ সন্নিধৌ যস্য নিত্যং
বর বিতরণ ভূমা বারণদ্রীশ্বরস্য ॥ ৮ ॥

কাংখীভাগ্যং কমল নিলয়া চেতসোভীষ্ট সিদ্ধিঃ
কল্যাণানাং নিধিরবিকলঃ কোপি কারুণ্য রাশিঃ।
পুণ্যানাং নঃ পরিণতিরসৌ ভূষয়ন্ ভোগিশয্যাং
বেগাসেতুর্জয়তি বিপুলো বিশ্ব রক্ষকহেতুঃ ॥ ৯ ॥

বেগাসেতোরিদং স্তোত্রং বেঙ্কটেশেন নির্মিতম্।
যে পঠন্তি জনাস্তেষাং যথোক্তং কুরুতে হরিঃ ॥ ১০ ॥

॥ ইতি শ্রী-বেগাসেতুস্তোত্রম্ সমাপ্তম্ ॥

কবিতার্কিকসিংহায় কল্যাণগুণশালিনে।
শ্রীমতে বেঙ্কটেশায় বেদান্তগুরবে নমঃ ॥